International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 665-667

सार्क : उत्पत्ति, विकाश, संभावना एवं उपलब्धियां

डॉ० दुर्गेश सिंह

प्रवक्ता, राजनीति शास्त्र, केवलपत्ती रामआसरे महाविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया या उपमहाद्वीप के देशों के बीच सहयोग की तार्किक नैसर्गिक आधारशिला दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहायेाग संगठन के स्थापना के साथ हुआ। सार्क की स्थापना को 1980 के दशक की दक्षिण एशिया की राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रीय सांस्कृतिक दृष्टि से भविष्य में गहरा प्रभाव उत्पन्न करने वाली घटना मानी गई। इसकी स्थापना की पृष्ठभूमि में क्षेत्रीय एकीकरण (Regional integration) की अवधरणा है। अर्नेष्ट हैंस ने इस अवधरणा की व्याख्या करते हुए लिखा है कि ''यह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा विविध राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यों के राजनीतिक अभिनेताओं को इस बात के लिए मना लिया जाता है कि वे अपनी निष्ठा, अपेक्षाओं और राजनीतिक गतिविधियों को ऐसे व्यापक केन्द्र की ओर मोड़ दें जिसकी संस्थाओं का क्षेत्राधिकार पूर्व स्थापित राष्ट्र राज्य तक फैला हो।'' यह ऐसी विशेष प्रकार की प्रक्रिया है जो किसी क्षेत्र के अनेक देशों को परस्पर सामूहिक निर्णय–व्यवस्था में जोड़ देती है। जोसेफ नाई (Joseph Nye) ने कहा है कि एकीकरण की प्रक्रिया एक दूसरे के उत्तरदायित्वों और सामान्य हितों को मान्यता दी जाती है।

अंर्तराष्ट्रीय परिदृश्य में संघर्ष की स्थितियां अक्सर बनती रहती है। संघर्ष प्रायः आपसी हितों के विरोधी होने पर उत्पन्न होते हैं। जो हिंसा युद्धविनाश का रूप धरण कर लेते हैं। अतः संघर्ष का विकल्प होता है सहयोग किसी भी क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन देशों के मध्य तनाव और संघर्ष को कम करने तथा सहयेाग को प्रत्साहन देने में सहायक होते हैं। क्षेत्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को क्षेत्रीय सहयोग संगठनों के रूप में संस्थागत किया जाता है।

''अनेक सामान्य निर्धारक तत्वों, जो प्रायः क्षेत्रीय सहयोग को प्रोत्साहन देते हैं भूगोल, जाति, भाष धर्म, सभ्यता, ऐतिहासिक, राजनीतिक अथवा सामाजिक आर्थिक समानताएं विभिन्न देशों में जितना अधिक पारस्परिक मेल जोल और आदान–प्रदान होगा सामूहिक प्रयासों की सफलता की संभावनाएं उतनी ही अध्कि होगी।''[1]

इन तत्वों का प्रयोग क्षेत्रीय सहयेाग में बहुत पहले से होता रहा है लेकिन सार्क का विकास 80 के दशक में धीरे–धीरे प्रारम्भ हुआ। दक्षिण एशियाई देशों का क्षेत्रीय संगठन बनाने का विचार बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति जिया–उर रहमान ने दिया। उन्होंने 1977 से 1980 के बीच भारत, पाकिस्तान, नेपाल और श्रीलंका की यात्रा की उसके बाद ही उन्होंने एक दस्तावेज तैयार करवाया जिसमें नवम्बर 1980 में आपसी सहयोग के लिए दश मुद्दे तय किये गये। बाद में इसमें पर्यटन और संयुक्त उद्योग को निकाल दिया गया। इन्हीं में से दस मुद्दे आज भी 'सार्क' देशों के बीच सहयेाग के आधर है।

सहयोग के क्षेत्राों का निर्धारण

सार्क का मूल आधर क्षेत्रीय सहयोग पर बल देना हैं 1983 के अगस्त में तय किए क्षेत्रों में ऐसे नौ बिंदु निर्धारित किए गए– कृषि, स्वास्थ्य सेवाएं, विज्ञान तथा तकनीक दूर संचार तथा यातायात, खेलकूद तथा सांस्कृतिक सहयेाग। बाद में इसमें आतंकवाद की समस्या, मादक द्रव्यों की तस्करी तथा क्षेत्रीय विकास में महिलाओं की भूमिका जैसे विषय जोड़ दिए गए।

दक्षिण एशिया में समय बहुत तेजी से धूम रहा है 30 साल पहले जब सार्क की स्थापना की गई थी विश्व की 22 प्रतिशत जनसंख्या के साथ यह सबसे बड़ा क्षेत्रीय संगठन था भारत पाकिस्तान का द्विपक्षीय मुद्दे सार्क की भावना को आगे बढ़ाने में सबसे बड़ी बाध थे।

सदी के बदलने के साथ बदलाव शुरू हुआ दक्षिण एशिया के नेताओं ने युरोपीय संघ और आसियान जैसे क्षेत्राीय संगठनों की सफलता से सबक सीखा। ''आज सार्क यदि आसियान, नाक्टा से कुछ ग्रहण करने की इच्छा–शक्ति दिखा सके तो क्षेत्र में भयंकर गरीबी, अशिक्षा, बीमारी के साथ–साथ प्राकृतिक अपदा बाढ़, अकाल, भूकंप को साक्षी चुनौती मानकर साझा समाधान निकाला जा सकता है। क्योंकि भूकंप का एपीसेन्टर यदि पाकिस्तान में होता है तो भौतिक जान–माल की क्षति भारत में भी होता है। बारिश नेपाल में होती है बाढ़ उत्तरी बिहार में आता है। आतंकवाद से पाकिस्तान पीड़ित है तो उसका दुष्परिणाम भारत भोग रहा है। इसी प्रकार संसाधनों का भी पारस्परिक लाभ उठाया जा सकता है। जलविद्युत की अपार क्षमता नेपाल, भूटान में हैं तो भारत बिजली का खरीददार हो सकता हैं चायपत्ती और काफी का अुंतराष्ट्रीय स्तर पर उचित कीमत भारत श्रीलंका आपसी सहयोग से प्राप्त कर सकते हैं।''[2]

उपरोक्त परिस्थितियों के होते हुए भी 21वीं सदी के दूसरे दशक में मौजूद विश्व व्यवस्था जो कि आतंकवाद की भयावहता, ग्लोबल वार्मिंग बहुध्रुवी विश्व व्यवस्था की तरफ बढ़ रहा है में सार्क के समक्ष कुछ चुनौतियां हैं अगर इनसे पार पा लिया जाए तो दक्षिण एशिया की सामाजिक जवीन की विकृतियों राजनतिक स्थिरता, आर्थिक तरक्की की ऊंचाईयों को पाया जा सकता है।

सार्क की उपलब्धियां

वर्तमान में सार्क की उपलब्धियां सार्क की उपस्थिति से दक्षिण एशिया के नेताओं को एक साथ बैठकर सहयोग के बिन्दु तय करने का मंच प्रदान करता है। आजादी के बाद से दक्षिण एशिया के नेताओं को अपने समस्याओं का साझा करने का कोई माध्यम इससे पहले नहीं था। इसकी प्रासंगिकता इसकी स्थापना के शुरूवाती वर्षो में ही नजर आने लगी जब 1986 में

बंग्लोर में भारत पाक शीर्ष नेताओं की औपचारिक मुलाकात में उस तानव को कम किया जा सकता जो भारत के सैन्य अभ्यास आपरेशन वासटाक जो भारत पाक सीमा पर चलाया गया था जिससे दोनों देशों में तनाव उत्पन्न हो गया था। इसी क्रम में 1987 में सार्क विदेश मंत्री सम्मेलन में भारत श्रीलंका तमिल मशले पर सफल वार्ता की। इसी प्रकार 1992 में दावोस में नरसिंह राव और नवाज सरीफ के बीच अनौपचारिक बातचीत के बाद पाकिस्तान सरकार ने JKLF को सीमा नियंत्रण के आरपार सीज फायर को रोकवाने में सफलता पाई। यह सफलता सम्भव क्यों हो पाई क्योंकि 1991 में ही दोनों नेताओं ने ''सार्क सम्मेलन में एक जनरल एग्रीमेंट किया था।

आज अमरीका, युरोपीय युनियन, जनवाद चीन ईरान, दक्षिण कोरिया पर्यवेक्षक दर्जा प्राप्त सदस्य देश है सार्क के। सार्क राष्ट्रों ने एक पृथक वित्तीय संस्था के अधीन एक विकास कोष के साथ–साथ एक स्थाई सचिवालय के गठन पर भी सहमति जताई जिसमें सामाजिक, इन्फ्रास्ट्रक्चर, आदि सार्क कार्यक्रम शामिल होंगे।

''एक कस्टम यूनियन, सामान्य बाजार और आर्थिक संघ के लिए दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA) में परिवर्तन के लिए SAPTA पहला कदम था। इस समझौते का उद्देश्य था समझौते में शामिल राज्यों के बीच पारस्परिक व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना इसमें ये बातें शामिल है अद्ध व्यापार सम्बन्धी बाधाओं को दूर करना तथा अनुबंधित राज्यों के क्षेत्रों के बीच वस्तुओं के सीमा पार आवाजाही को सुसाध्य बनाना, बद्ध मुक्त व्यापार क्षेत्र में न्यायोचित प्रतियोगिता की स्थितियों को बढ़ावा देना तथा अनुबंधित राज्यों के आर्थिक विकास के स्तर और स्वरूप को ध्यान में रखते हुए सभी के लिए समान लाभ सुनिश्चित करना।''[3]

''दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFIA) एक समझौता है जिसे 6 जनवरी 2004 को पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में इसके 12वें शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया इसने मुक्त व्यापार के निर्माण की एक संरचना तैयार की जिसमें भारत, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान, और मालदीप को 1.8 अरब आबादी शामिल थी। इस क्षेत्र के सात विदेश मंत्रियों ने वर्ष 2012 के अन्त तक इस प्रदेश में व्यवहारिक रूप से सभी उत्पादों के व्यापार पर शून्य सीमा शुल्क के साथ SAFTA के एक संरचनात्मक समझौते पर हस्तक्षार, किए। एक नया समझौता अर्थात् SAFTA 1 जनवरी 2006 को लागू हुआ और यह सात सरकारों द्वारा समझौते की स्वीकृति तक चलता रहेगा।''[4]

सार्क में सहयोग संवर्धन के लिए नीतिगत मानक :

1. दूर संचार और सूचना प्रणाली विकसित करना जरूरी है जिससे वस्तु एवं सेवाओं का आपूर्ति सुनिश्चित हो सके क्योंकि किसी भी सहयोग पूर्ण सम्बन्ध की पहली जरूरत क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।
2. आर्थिक प्रतिद्वन्द्वी के बजाय सहयोग की प्रवृत्ति होना होगा, माल की आवाजाही के लिए सस्ता ट्रांसपोर्ट कम सीमा शुल्क के प्रावधान दूरगामी प्रावधन है।
3. व्यापार के विस्तार हेतु वित्तीय लेनदेन सरल बनाना जरूरी शर्त है अच्छी बैंकिंग अवसंरचना उदार ऋण सुविधा का प्रबंध होना चाहिए।
4. राजनीतिक तनाव के वजह से संबंध बाधित रहते हैं जिससे भारी मांग होते हुए भी भारतीय माल का पाकिस्तान में स्मगलिंग होता है।

कृषि क्षेत्र

भारत में हरित क्रांति के बाद मुख्य रूप से गेहूं धन का उत्पादन बढ़ा। वही पाकिस्तान कॉटन के उत्पादन में अग्रणी है बांग्लादेश चावल मालद्वीप मत्स्य उत्पादन श्रीलंका चाय और नारियल, नेपाल, भूटान मक्के का बहुतायत उत्पादन करते हैं। इन उत्पादों का लाभ एक दूसरे को पहुचाया जा सकता हहैं इसके साथ ही कृषि में निवेश हेतु बहुत कुछ सीखा जा सकता है जिसमें है उर्वरक, मृदा और जल प्रबंधन, पफसल परिवर्तन आदि।

दक्षिण एशिया एक ही प्रकार की मानसूनी जलवायु वाला क्षेत्रा है अतः यदि राष्ट्र चाहे तो कृषी से सम्बन्धित अनुसंधान, मृदा अनुसंधान एवं कृषि शिक्षा के एक समान पाठ्यक्रम के द्वारा क्षेत्र की कृषि से जुड़े व्यापार एवं उद्योग में भारी उन्नति कर सकते हैं। क्षेत्रीय शांति हेतु न्यूक्लियर हथियारों का नियंत्रण नहीं करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र रजिस्टर की स्थापना करना जिससे नाभकीय पारदर्शिता अपनाई जा सके।

पर्यावरणीय चुनौती के विभिन्न पहलू

भूमि का क्षरण

दक्षिण एशिया में भूमिक्षरण के सबसे महत्वपूर्ण एक समान कारण खनन उद्योग है। जो कि असंगठित और अवैज्ञानिक है बिना किसी परिभाषित पर्यावरणीय प्रबंधन और भूमि पुर्नउद्धार के योजना के कारण संकट और गंभीर है।

विवनीकरण

बांग्लादेश और पाकिस्तान निर्वनीकरण से सर्वाधिक प्रभावित देश है। नेपाल में ईंधन की पूर्ति के लिए जंगली लकड़ी पर निर्भरता वनों पर दबाव बढ़ा रहा है इसके अलावा सड़क निर्माण भी बनों को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

समुद्री पारिस्थितिकी

एक अनुमान के अनुसार 1800 टन पेस्टसाइड बंगाल की खाड़ी में प्रतिवर्ष पहुंचता है। कोरल रीफ लैगून आदि का क्षरण बहुत तेजी से बढ़ा है जिसका कारा समुद्री तटों पर अनियंत्रित, बेलगाम आर्थिक गतिविधियां है।

जैव विविधता की हानि :

जैविकीय वस्तुओं का अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अच्छी कीमत जैव तत्वों के अवैध व्यापार को उत्साहित करते हैं।

दक्षिण एशिया पर्यावरण कार्यक्रम सहयोग (SACEF) 1982 में इस संस्था की स्थापना हुई। ACEF के तहत कुछ कार्यक्रम जिनको क्रियान्वयन में लाना है।

1. क्षमता निर्माण और जागरूकता को बढ़ाना।
2. सूचना का आदान प्रदान और तकनीक का स्थानान्तरण
3. पर्यावरण प्रबंधन में प्रशिक्षण और इसके लिए संस्थाओं का विकाश
4. सहयोगी प्रबंधन करना पर्वतीय परिस्थितिकी के लिए
5. वन्य जीवन का संरक्षण :

इस प्रकार ने अपने कुछ पारस्परिक लक्ष्य और कार्यक्रम निर्धरित किए है जिससे पर्यावरणीय चुनौतियों से साझा तौर पर निपटा जा सके।

निष्कर्ष :

''सार्क के ताकत इसकी क्षमता और इसका विकास इसके सदस्य देशों पर निर्भर है। सहयोग और दोस्ताना सम्बन्ध क्षेत्रा

में विकास के सम्बन्ध में परिवर्तन लाने वाला साधन बन सकता है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति हमेशा इस बात के लिए जागरूक रहती है सार्क को बनने में बाध डाली जाए।

अपेक्षाएं और सपने बढ़ने लगी है लोकों की जरूरतों को पूरा करना है तो क्षेत्र में परस्पर सम्मान और समक्ष विकसित करना होगा। पूर्वाग्रह, संदेह घृणा, और भेदभाव उन मूल कारणों में है जो उद्देश्य और भावनाओं को नष्ट करने में लगे हैं। तकनीकी सहयोग, व्यापार का सरलीकरण आदि आर्थिक और राजनीतिक विकाश में सहयोग कर सकते हैं जो क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को वैश्विक समृद्धि की ओर ले जाएगा।''[5]

संस्कृति, धर्म, सामाजिक और नश्लीय समानता आपसी लगाव के महत्वपूर्ण तत्व होते हैं किसी भी बातावरण के लिए किसी भी प्रकार का असाहिष्णुता और सामाजिक समस्या सकारात्मक विकाश को बाधित कर सकते हैं।

सार्क के सदस्यों के हाथों में है। चयन करना है विकास अथवा विभिन्न विचारधराओं से युक्त समाज विरोध कार्यकालापों को दक्षिण एशिया में जगह देना है।

संदर्भः

1. SAARC: Origin Growth, Potential and Achivement Muhammad Jashad Iqbal Page 128 http://www,inv.edu.pk pakistan jornal of history of culture. 2006; 21:2.
2. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति भारत और सार्क, पृष्ठ 395, बी एल. फाड़िया साहित्य भवन पब्लिकेशन।
3. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तपन विरवाल, पृष्ठ. 244।
4. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति (सिद्धांत तथा व्यवहार) यू. आर. घई, पृष्ठ. 171।
5. समकालीन भारत का परिचय : मनोज सिंह पृष्ठ – 361।